छंद ज्ञान

भाग-१

संपादक
दिलीप कुमार पाठक 'सरस'

विश्व जनचेतना ट्रस्ट भारत

छंद ज्ञान

भाग-1

सम्पादक

दिलीप कुमार पाठक 'सरस'

हंस पब्लिकेशन हाउस

दिल्ली–वाराणसी

छंद ज्ञान भाग-१

सम्पादक- दिलीप कुमार पाठक 'सरस'

राशि : Rs.**270.00**
प्रकाशन वर्ष : **2024**

ISBN : 978-93-92348-90-7

प्रकाशक/लेखक की अनुमति के बिना पुस्तक या इसके किसी भी अंश को संक्षिप्त परिवर्धित कर प्रकाशित करना, फिल्म बनाना क़ानूनन अपराध है।

© विश्व जनचेतना ट्रस्ट भारत

प्रकाशकः

हंस पब्लिकेशन हाउस

दिल्ली - 4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली -110002

वाराणसी- लमही, वाराणसी,उत्तर प्रदेश-221007
Mob. : +91-9044798756, +91-9721652681
E-mail : premchandhans1880@gmail.com
Web. : www.premchandpath.com

आवरणः- **बच्चे लाल वर्मा**
पृष्ठ-सज्जा एवं कम्पोज़िग ले-आउट : **शिव प्रसाद सिंह**
मुद्रक : आर० के० ऑफसेट, दरियागंज, नई दिल्ली

Published in India
Published by Usha Gaur for **HANS PUBLICATION HOUSE**, lamahi, Varanasi Uttar Pradesh 221007 Type Setting Shiw Pd. Singh and Printed by R.K. Offset Printers, Delhi.

काव्यगत सौन्दर्य से नित, रस-कलश तुमने भरा।
काव्य-पथ उर्वर तुम्ही से, लेखनी की तुम धरा।।
शीश चरणों में झुकाता, छंद का उपहार दो।
शारदे माता हमारी, ज्ञान का भंडार दो।।

दिलीप कुमार पाठक 'सरस'

मार्गदर्शक द्वय

शैलेन्द्र खरे 'सोम'

संतोष कुमार 'प्रीत'

विशेष सहयोगी

इंजी. हेमंत कुमार जैन 'सिंघई'

ओम प्रकाश फुलारा 'प्रफुल्ल'

पं. सुमित शर्मा 'पियूष'

नितेन्द्र सिंह परमार 'भारत'

अनुक्रमणिका

	विवरण	पृष्ठ सं0.
1.	सम्पादकीय (दिलीप कुमार पाठक 'सरस')	07
2.	भूमिका (संतोष कुमार 'प्रीत')	11
3.	प्राक्कथन (पं. सुमित शर्मा 'पियूष')	13
4.	छंद के विषय में (ओम प्रकाश फुलारा 'प्रफुल्ल')	15
5.	छंद के प्रकार	16
6.	मात्रिक छंद	16
7.	मात्राभार की गणना (इंजी. हेमंत कुमार जैन 'सिंघई')	17
8.	वाचिक भार	20
9.	कल संयोजन	21
10.	दोहा छंद	22
11.	चौपाई छंद	26
12.	रोला छंद	29
13.	श्रृंगार छंद	32
14.	महाश्रृंगार छंद	35
15.	तांटक छंद	38
16.	चौपई छंद	40
17.	वीर/आल्हा छंद	43
18.	मत्त सवैया/राधेश्यामी छंद	46
19.	गंग छंद	49
20.	अहीर छंद	51
21.	मुक्तामणि छंद	53
22.	दिग्पाल/मृदुगति छंद	55
23.	सरसी/कबीर/सुमंदर छंद	57
24.	पदपादाकुलक छंद	60

25.	अरुण छंद	62
26.	योग छंद	64
27.	पीयूषवर्ष छंद	66
28.	शक्ति छंद	68
29.	मधुमालती छंद	71
30.	त्रिभंगी छंद	74
31.	विशेष जानकारी (नितेन्द्र सिंह परमार 'भारत')	77
32.	छंद पर आधारित गीत	78
33.	समीक्षा (शैलेन्द्र खरे 'सोम')	103
34.	आभार (सुशीला धस्माना 'मुस्कान')	104

संपादकीय

प्रिय मित्रों!

सादर नमस्कार,

देवता के रूप जैसे, आप हैं संज्ञान में।
शब्द बौने हो गए हैं, आपके सम्मान में।।
छंद गुरुवर ने सिखाए, वंदना गुरु की करूँ।
काम कोई जब करूँ मैं, चित्त में गुरु को धरूँ।।

संस्कृत वाङ्मय (साहित्य) में सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद को माना जाता है, यह सर्वविदित है। वेदों को समझने के लिए वेदांगों को समझना नितांत आवश्यक है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद और निरुक्त- ये छः वेदांग है। छंद को वेदों का पाद, कल्प को हाथ, ज्योतिष को नेत्र, निरुक्त को कान, शिक्षा को नाक, व्याकरण को मुख कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि सबसे पहले छंदों का ज्ञान कराने वाला प्राचीनतम् प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद है।

छंद को वेदों का पाद या चरण बताया गया है। जिस प्रकार चलने के लिए पादों (पैरों) की विशेष आवश्यकता होती है उसी प्रकार भाव संचरण के लिए छंदों की। सरल शब्दों में कहें तो कविता में भाव आत्मा है तो छंद शरीर है। और सरल शब्दों में कहें तो यदि गद्य की कसौटी व्याकरण है तो पद्य या कविता की कसौटी छंद है। छंदशास्त्र के अनुसार 'वाक्य में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा-गणना तथा यति-गति से संबद्ध विशिष्ट नियमों से संयोजित पद्य रचना को छंद कहते हैं।' छंदस् शब्द 'छद्' धातु से बना है। धातुगत व्युत्पत्तिपरक अर्थ हुआ - 'जो अपनी इच्छा से चलता है।' इसी मूल से स्वच्छंद जैसे शब्द आए हैं। अतः छंद शब्द के मूल में गति का भाव है। पिंगल मुनि द्वारा रचित 'छंदस्-सूत्रम्' छंदशास्त्र का पहला स्वतंत्र व मूल ग्रंथ माना जाता है। जिसे 'पिंगल शास्त्र' भी कहते हैं। कवि कालिदास जी द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम' में विभिन्न छंदों के उदाहरण मिलते हैं।

छंद चूंकि काव्य के लिए उपयोगी हैं तो काव्य क्या है?

काव्यः- काव्य के तीन रूप- गद्य, पद्य और चम्पू को माना गया है। आचार्य विश्वनाथ जी ने अपने ग्रंथ साहित्य दर्पण में काव्य को इस प्रकार व्यक्त

किया है - 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्' अर्थात् रस से युक्त वाक्य ही काव्य है।

आचार्य पंडितराज जगन्नाथ जी के अनुसार - 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है। रमणीय का अर्थ वही पूर्ववर्ती रसात्मकता है। यहाँ जगन्नाथ जी की मौलिक स्थापना यह है कि काव्यत्व शब्द में निहित होता है न कि सम्पूर्ण वाक्य में। रमणीयता या चारूत्व की स्थिति शब्द में मानने के पीछे वेदांत दर्शन और व्याकरण को आधार बनाया गया है।

अलंकार संप्रदाय के जनक आचार्य भामाह जी ने काव्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि- 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्- अर्थात् शब्द और अर्थ से युक्त काव्य होता है।

इसी प्रकार आचार्य मम्मट जी ने अपने ग्रंथ 'काव्य प्रकाश' में काव्य के लिए 'अलंकार' को, आचार्य आनंदबर्धन जी ने 'ध्वन्यालोक' में काव्य के अन्तर्गत 'ध्वनि' को विशेष माना है तथा आचार्य कुंतक जी ने 'वक्रोक्तिजीवितम्' अपने काव्यग्रंथ में काव्य के लिए 'वक्रोक्ति' को विशेष माना है।

हिंदी में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी आदि ने रसतत्व या भाव तत्व को ही काव्य के रूप में प्रधानता दी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के अनुसार- ''जो उक्ति हृदय में कोई भाव जागृत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन करदे, वह काव्य है।''

मैं अपने अनुसार कहूँ तो 'काव्य वही है जो आनंद की अनुभूति कराए।'

काव्य क्यों महत्त्वपूर्ण है? इस संदर्भ में राजशेखर ने कविचर्या के प्रकरण में बताया है कि कवि को विद्याओं और उपविद्याओं की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। व्याकरण, कोश, छंद, और अलंकार - ये चार विद्याएँ हैं। 64 कलाएँ ही उपविद्याएँ हैं। कवित्व के 8 स्रोत हैं- स्वास्थ्य, प्रतिभा, अभ्यास, भक्ति, विद्वत्कथा, बहुश्रुतता, स्मृतिदृढ़ता और राग।

स्वास्थ्यं प्रतिभाभ्यासो भक्तिर्विद्वत्कथा बहुश्रुतता।
स्मृतिदाढर्यमनिर्वेदश्च मातरोऽष्टौ कवित्वस्य।।
(काव्यमीमांसा)-3,